झारखण्ड में मुण्डा जनजातियों की सामाजिक – आर्थिक दशाएँ और राजनीतिक चेतना–

खूँटी जिला के “मुरहू” प्रखण्ड के संदर्भ में

(बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय धनबाद (झारखण्ड)
में

पीएच0 डी0 की उपाधि हेतु राजनीति विज्ञान विभाग,

सामाजिक विज्ञान संकाय में पंजीयन हेतु प्रस्तावित शोध–प्रारूप

वर्ष – 2020

शोध – निर्देशक

डॉ0 अमूल्य सुमन बेक

सहायक प्राध्यापक
राजनीति विज्ञान विभाग
बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल
विश्वविद्यालय, धनबाद

शोधार्थी

सोमनाथ पुरती

राजनीति विज्ञान (NET)
बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल, विश्वविद्यालय
धनबाद (झारखण्ड)

प्रस्तावना

झारखण्ड एक जनजाति बहुल राज्य है । यहाँ 32 प्रकार की जनजातियाँ पायी जाती हैं । मुण्डा यहाँ की प्रमुख जनजाति है । यह झारखण्ड के स्वतंत्रता सेनानी बिरसा मुण्डा की जन्मभूमि और कर्म भूमि है ।

सदियों से मुण्डा जनजातियों की रीति-रिवाज, परंपरा और अनूठी संस्कुति शोधार्थियो की रूचि का बिषय रहा है ।यह जनजाति झारखण्ड के विशेष कर खूंटी और राँची जिले में निवास करती है । इसके अलावे गुमला, लोहरदगा, सिमडेगा, हजारीबाग, चतरा सरायकेला-खरसावां , पश्चिम सिंहभूम आदि जिलों में बसे हैं । इनकी भाषा मुण्डारी है ।

शहरीकरण और औधिगिकीकरण का जनतातियों की संस्कृति पर गहरा प्रभाव पड़ता है ।मुण्डा जनजाति पर भी इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ा हैं । यहाँ इसके चार प्रकार पाये जाते हैं -

1. हसादअः मुण्डा - यह राँची - चाईबासा रोड के बायीं तरफ बसा है । खुँटी मुख्य्य क्षेत्र है ।

2. नगुरी मुण्डा - यह राँची - चाईबासा रोड के दाई ओर निवास करती है । तोरपा, तपकरा, कमडारा इत्यादि क्षेत्रों में बसे हैं ।

3. लतार दिसुम मुण्डा - यह बंगाल से सटे तमाड़ और बुन्डु, सिल्ली, सोनाहातु इत्यादि इलाकों में पाये जाते हैं ।

4. केरअः मुण्डा - यह राँची शहर के चारों ओर सटे हुए आस-पास के इलाकों मे पाये जाते हैं इन चारों मुण्डा जनजाति के प्रकारों में हसादअः मुण्डा को खांटी अर्थात मूल स्वरूप का माना गया है क्योंकि इनकी संस्कृति अपने मूल रूप में है । 1 (चन्द्र ,2003,पेज-45)

जबकी नगुरी मुण्डा जनजातियों पर “इसाईयत” का प्रभाव स्पष्ट झलकता है । उनकी भाषा “मुण्डारी” ही है, पर यह “नागपुरी” भाषा के द्वारा अतिक्रमित है । 2 (स्पेनसर, 1963,पेज-63) यही बात “लतार दिसुम मुण्डा” जनजाति प र भी लागू होती है । इनकी भाषा - संस्कृति पर बंग्ला और पंचपरगनिया की छाप दिखाई पड़ ती है और “केराअः मुण्डा” की
शाखा “उराँव या कुडख” भाषा वालो से मेल-जोल के कारण विकृत हो गया है ।

अतः मुण्डा जनजाति पर शोध कार्य करना है तो "हसादअः मुण्डा" की शाखा का चयन करना श्रेयस्कर होगा । यही शाखा अपने मूल स्वस्प में अभी भी अस्तिव में हैं । यह "समग्र" का अच्छा स्त्रोत है ।

सभी "आदिवासी" या "जनजातियो" सदियों से ही शोधार्थियों के आकर्षण के केन्द्र रहे हैं । चाहे वे विदेशी यात्री हों या भारतीय इतिहासकार और शोधार्थी ।

"जनजातीय अध्ययन" में मुख्य कठिनाई है –

स्त्रोत की कमी – यद्यपि छोटानागपुर में "मुण्डाओं का शासन " का गौरवपूर्ण इतिहास रहा है । पर चुंकि इनका कोई लिखित दस्तावेज उपलब्ध नहीं होने के कारण इनकी उत्पति, प्रवास इत्यादि के बारे में जानना बहुत कठिन है । अभी जो भी इतिहास और शोध पत्र प्रकाशित किये गये है, वे काफी कम संख्या में हैं ।

स्त्रोत के बारे में दो बातें महत्वपूर्ण हैं –

(1) बडे – बुजुर्ग जो चलता–फिरता पुस्तकालय होते हैं ।

(2) कुछ क्षेत्र अभी भी अपनी संस्कृति को अक्षुण्ण रखे हुए है, जो काफी दुर्लभ है ।

यही तसल्ली की बात है ।

मुण्डाओं के इतिहास को जानने के लिए यही दो स्त्रोत मार्गदर्शन का काम करते रहे हैं। मुण्डा शासकों के द्वारा कोई सिक्का चलाए जाने का प्रमाण नही मिलता है न ही कोई किला , मकबरा या शिलालेख जिससें कोई जानकारी हासिल किया जा सकें। 3(रिजले,2017,पेज103)

भारतीय इतिासकारों के द्वारा हालांकि प्रसंगवश मुण्डाओं का विवरण जरूर दिया गया है । लेकिन अनेक पक्षों को छोड़ गए है या अनसुलझाा ही छोड़ गए । यह बात मुण्डाओं की उत्पति के सम्बंध में सही साबित होती है । विदेशी यात्रियों के विवरणो मे भी मुण्डाओं के उदभव के बारे में स्पष्ट जानकारी नही मिलती है ।

यह भी सत्य है कि आज की तारीख में जो शोध के फलस्वरूप जो तथ्य प्रकाश में आयेंगे, वे पूर्व की खोजों से भिन्न और परिवर्तित रूप में होंगे ।

भारत के जनजातियों के विद्रोह के इतिहास में मुण्डाओं के विद्रोह या बिरसा आन्दोलन का वर्णन मिलता है । "पारंपरिक मुण्डा शासन व्यवस्था" का अभी तक भी किसी न किसी रूप में अस्तित्व है । 4 (मुण्ड़ा, भोलयुम-40,पेज-108) यह "मुण्डा राजाओ" के शासन - पद्धति का स्मृति शेष है, धरोहर है । इधर झारखण्ड अलग राज्य का आन्दोलन भी काफी उतार - चढ़ाव का रहा है । इस आंदोलन में भीमुण्डा नेताओं (यथा-जयपाल सिंह मुण्डा) की अग्रणी भूमिका रही है । झारखण्ड के सत्ता की बागडोर भी कई बार "मुण्डा मुख्यमंत्री" (श्री अर्जुन मुण्डा) के हाथों मे रही है । ये सभी घटनायें सचमुच ही मुण्डा जनजातियों की "राजनीतिक चेतना" को उजागर करती है ।

अतः मुण्डा जनजातियो के बारे में शोध करना ज्ञानवर्द्धक तो होगा ही, इसके अलावे यह प्रेरक-पूँज भी साबित होगा । यह शोधार्थियो के लिए भी गौरव की बात है ।

शोध समस्या

1. अधिकतम प्रतिशत मुण्डा जनसंख्या विकास से अभी भी काफी दूर है ।

2. मुण्डा जनजातियों के बीच में पौराणिक रीति से कृषि कार्य होते हैं, आर्थिक उन्नति मौसम आधारित है । इसलिए आर्थिक पिछड़ापन है ।

3. मूरहू प्रखण्ड के मुण्डा जनजाति को जमीनी-विवाद के मुददे उन्हें कोर्ट में उलझाये रखते हैं ।

4. इन क्षेत्रों में सरकारी योजनाओं के प्रति अनभिज्ञता है ।

5. राजनीतिक चेतना का अभाव है ।

साहित्य समीक्षा

प्रस्तावित शोध के संदर्भ में निम्नलिखित पुस्तका का अध्यायन किया गया-

राय की पुस्तक में 5(राय,1912,पेज-119)
मुण्डाओं की उत्पति, तीनों काल का इतिहास, नृजातीय वर्णन, ब्रहमांड की उत्पति का सिद्धांत, इतिहास का विशिष्ट काल और विधि संम्मत उम्मीद का विशद विवरण है ।

आदिवासी पत्रिका - जनजातीय जीवन संस्कृति और लोक पंरपरा को पूर्णतः समर्पित यह पत्रिका प्रथम बार 1920 में आदिवासी उन्नति समाज के द्वारा प्रारम्भ किया गया था ।वर्तमान मे महिलाएँ भी उनके सम्पादक मंडल में है ।

टोपनो की पुस्तक 6 (टोपनो,2004,पेज-5) सिंगबोंगा ने सभी की सृष्टि की और उन्हें सिखाया कि कैसे रहना हैं । इसलिए मुण्ड़ा प्रकृति में बढ़ता हैं एंव उससे उसे सब कुछ मिलता हैं। मुण्डारी गीतों के द्वारा इस जनजाति को समझने का प्रयास किया गया है । मुण्ड़ा गीतो में प्र कृति का समावेश पाया जाता हैं। मुण्ड़ा प्रकृति से ही संगीत सिखता हैं। इस पुस्तक से गीतों के द्वारा मुण्डा जनजाति के बारे में बहुत संकेत मिलता है ।

सिंह की पुस्तक 7 (सिंह , 1966,पेज-27) में मुण्डाओं के बारे मे विशद विवरण है ।

बारला के अनुसार 8(बारला,2008,पेज–112) राजनीतिक समाजीकरण के बारे में विस्तार से वर्णन है । मुण्डा समाज को नजदीक से समझने में यह मार्गदर्शिका है । मुण्डाओं के बीच व्याप्त घोर अन्धविश्वास,सम्पति उतराधिकार और शादी-विवाह परंपरा सहित पूरे मुण्डा जनजाति का गहन जानकारी उपलब्ध कराता हैं ।

उद्वेश्य

1 मुण्डा जनजातियों मे सामाजिक - आर्थिक समस्याओं को पहचाना।

2 मुण्डा जनजातिया की राजनितिक चेतना का आकलन करना ।

3 मुण्डा जनजातिया में राजनितिक सशक्तिकरण ढूढना ।

4 मुण्डा जनजातियों मे सामाजिक उत्थान के लिए सरकार दवरा किये गऐ प्रयासो को जानना।

5 मुण्डा जनजातियों के आर्थिक दशा को जानना ।

6 सरकारी योजनाओं को लागू करने में जो दिक्कते हैं उसे जानना ।

7 मुण्डा जनजातियों के समाजिक- आर्थिक एंव राजनीतिक उत्थान ढूढना ।

परिकल्पना

1 मुरहू प्रखण्ड के मुण्डा जनजातियों के बीच राजनीतिक चेतना विकसित करने में "चर्च" की महत्वपूर्ण भूमिका है ।

2. मुरहू प्रखण्ड की मुण्डा जनजाति नक्सलवाद से प्रभावित रहा है, इसलिए विकास अधूरा है ।

2(a) मुरहू प्रखण्ड की मुण्डा जनजाति झारखण्ड़ के अन्य क्षेत्र के जनजातियो के अपेक्षा आर्थिक रुप से पिछडे हैं।

3 मुरहू प्रखण्ड की मुण्डा जनजातियो की महिलाओं की दशा खूँटी जिले के महिलाओं से अच्छी हैं।

4 सी0 एन0 टी0 एक्ट मुण्ड़ा जनजाति के विकास में सकारात्मक भुमिका अदा करती हैं।

5. मुरहू प्रखण्ड की मुण्डा जनजाति का "मतदान व्यवहार" जल, जंगल और जमीन से जुड़े मुद्दे और धार्मिक कारक द्वारा मुख्यतः प्रभावित होता है ।

6. रोजगार के क्षेत्र में इनकी पसंदीदा नौकरी पुलिस विभाग और सेना है।

7 इनमें सरकारी योजनाओ के अनभिज्ञाता हैं ।

8 महिला – तस्करी ,पलायन तथा डायन – प्रथा विद्यमान होने के पीछे आर्थिक कारण जिम्मेदार है ।

शोध विधि

विवरणात्मक और विश्लेषणात्मक विधि को अपनाया जाएगा । साथ ही ऐतिहासिक और अनुभवात्मक विधि का भी सहारा लिया जाएगा ।
प्राथमिक आँकडा के तौर पर अवलोकन साक्षात्कार अनुसूची और प्रश्नावली विधि अपनाया जाएगा ।

जबकि द्वितीयक आँकडा के तौर पर दो तरह से सहायता ली जाएगीं –

(क) प्रकाशित

1. शोध संस्थानों के प्रतिवेदन

2. व्यक्तिगत प्रकाशन

3. समितियों और परिषदों के प्रतिवेदन

5. अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के अध्ययन

6. पत्र–पत्रिकाएँ

(ख) अप्रकाशित

1. लोक–गीत

2. लोक संस्कृति

3. शिला – लेख

4. लोक – कथाएँ

अध्ययन क्षेत्रः–समग्र

समग्र के तौर पर मुरहू प्रखण्ड का चयन किया गया है । यह खूंटी जिले का एक मुण्डा जनजाति बहुल प्रखण्ड है ।

2011 की जनगाना के अनुसार

कुल जनसंख्या – 84,908

स्त्री – 42,211

पुरूष – 42,697

पंचायतो की संख्या – 16

गांवो की संख्या – 141 है ।

16. पंचायतों के नाम इस प्रकार हैं –

(1) बिचना

(2) बिंदा

(3) दिगड़ी

(9) कुजला

(10) इंदीपीड़ी

(11) केवड़ा

(4) गानालोया
(5) गोड़ाटोली
(6) गुटूहातु
(7) हस्सा
(8) हेठगोवा
(12) कुंडाकेल
(13) कुदा
(14) कुड़ापुरती
(15) मुरहू
(16) रूमतूकेल

विशलेषणात्मक विधि के रुप में पाइ चित्र, बार चित्र,बहु गुण दण्ड चित्र, माध्य, माध्यिका,बहुलक और अवृती आयत चित्र का प्रयोग किया जाऐगा।

महत्व

1. शोध के द्वारा मुण्डा जनजाति के आर्थिक पिछड़ापन का हल ढूंढने में मदद मिलेगी ।
2. सामाजिक परिस्थितियों को जानकर मुरहू प्रखण्ड के गाँवो में अपासी सौहार्द्र को बढ़ावा देकर लोगो को विकास के लिए बढ़ावा दिया जाएगा ।
3. मुण्डा जनजाति झारखण्ड की एक प्रमुख जनजाति है । इनकी पारंपरिक शासन व्यवस्था अपनी तरह की अनूठी है । अतः इनकी राजनीतिक चेतना का अध्ययन का महत्व है ।
4. शोध के माध्यम से मुण्डा जनजातियों की राजनीतिक चेतनाओं को सामने लाकर लोकतांत्रिक व्यवस्था एवं शक्ति के विकेन्द्रीकरण को प्रोत्साहित किया जा सकेगा ।

योगदान

1. अभी तक मुरहू प्रखण्ड के विशेष संदर्भ में मुण्डा जनजाति के सभी पक्षों का गहन अध्ययन नहीं किया गया है । इस प्रखण्ड में शोध कार्य करके इनकी दशा एवं राजनीतिक चेतना को प्रकाश में लाया जाएगा । इसके द्वारा दूसरी जनजातियो को सीखने में मदद मिलेगी ।

2. राजनीतिक चेतना से प्रजातांत्रिक व्यवस्था को बढाया जाएगा एंव शक्ति के विकेन्द्रीकरण से निम्न तबके के लोगों तक सरकारी योजनाओ को पहुँचाने में दिशा निर्देशक साबित होगा ।

इकाई

पांच पंचायतों को दैवनिदर्शन विधि के तौर पर चुना जाएगा। प्रत्येक पंचायत से दो गॉव चुने जाएगे। चुने गए गावो से मुण्ड़ा जनजातियो के घरो की सुची तैयार की जाएगी। इन घरो से प्रशनावाली एंव सक्षात्कार दवारा सूचना एंव आकड़ा इकटठा किया जाएगा ।

प्रस्तावित अध्यायीकरण

1. प्रथम अध्याय – प्रस्तावना –

2. द्वितीय अध्याय – झारखण्ड के मुण्डा जनजातियों का एक परिचय।

3. तृतीय अध्याय – झारखण्ड के मुण्डा जनजातियो की सामाजिक परिस्थितियाँ ।

4. चौथा अध्याय – झारखण्ड के मुण्डा जनजातियो की आर्थिक दशाएॅ।

5. पाँचवा अध्याय – झारखण्ड के मुण्डा जनजातियो की राजनीतिक दशाँए ।

6. छठा अध्याय – झारखण्ड सरकार द्वारा मुण्डा एवं अन्य जनजातियों के लिए चलायी गई योजनाएँ

7.सातवां अध्याय – उपसंहार

प्रश्नावली

(क) सामाजिक दशाओं से संबंधित प्रश्न

1. बुनियादी सुविधाओ (आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य, बिजली, सड़क) की स्थिति क्या है ।

2. जन्मोत्सव, शादी विवाह , पर्व त्योहार का स्वरूप अभी कैसा है ?

3. क्या “अखरा” और “युवागृह” अभी भी क्रमशः प्रमुख गतिविधियों और प्रशिक्षण केन्द्र की भूमिका मे है ?

4. क्या सामाजिक बुराईयां (अंधविश्वास, जादु टोना, डायन प्रथा, महिला तस्कारी, शराब खोरी) में कमशः कमी आ रही है ?

5. मुण्डा इलाकों की पहचान जल– जंगल, नदी –पहाड़ अर्थात पर्यावरण किस हालत में है ? इसका क्षेत्रफल सिकुड़ तो नहीं रहा है ?

(ख) आर्थिक दशाओं से संबधित प्रश्न

1. क्या “हाट बाजार” अभी भी आर्थिक क्रियाकलाप के प्रमुख केन्द्र हैं ?
2. क्या सरकार की “जनवितरण प्रणाली” और अय कल्याणकारी योजनाओं का लाभ सभी तक पहुँच रहा है ?
3. क्या कारण है कि मणुडा इलाका “नक्सलवाद” और “अवैध अफीम की खेती” का प्रमुख गढ़ बन गया है ?
4. सरकारी नौकरी या अन्य व्यवसायों वाले लोगो की स्थिति क्या अन्य ग्रामीणों से बेहतर है ?
5. कृषि कार्य एवं मवेशियों के पीने हेतु सरकार द्वारा निर्मित “डोभा” से कितना लाभ पहुँच रहा है ?

(ग) राजीतिक चेतना संबंधी प्रश्न

1. क्या “मुखियापति” के उद्‌भव से पंचायतो में “महिला आरक्षण” एक मिथक बन गया है ?
2. क्या ग्रामीण जनता के पास इतना अवकाश (फुर्सत) और “समझ” है कि वह “राजनीतिक विषयों” पर विचार विमर्श कर सकें ?
3. अपने पंचायतो, एम0 पी., एम0 एल0 ए0 के चुनाव में “मतदान” किस आधार पर करते हैं ?
4. अपने चुने हुए प्रतिनिधियों से किस प्रकार की मांग रखते हैं ?
5. क्या ग्रामीण राजनीति इनकी “सामाजिक समरसता” पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहा है ?